कृषि विज्ञान केंद्र हरदोई-II द्वारा पराली प्रबंधन चेतना यात्रा के अंतर्गत जागरूकता अभियान का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र लखनऊ के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र हरदोई-II द्वारा पराली प्रबंधन चेतना यात्रा के अंतर्गत जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र लखनऊ के अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार दुबे थे। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ पंकज नौटियाल ने फसल अवशेष प्रबंधन योजना के बारे में किसानों को बताते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश के 27 जिलों में यह योजना क्रियान्वित की जा रही है तथा इस वर्ष हरदोई- II को यह योजना स्वीकृत हुई है इसके अंतर्गत किसानों को प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन के माध्यम से जागरूक किया जाएगा जिससे कि वह फसलों के अवशेष का प्रबंधन भली प्रकार कर सकें तथा फसल अवशेषों को जलाने से बचे ताकि पर्यावरण को स्वच्छ रखा जा सके फसल अवशेष प्रबंधन द्वारा प्रदूषण को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

मुख्य अतिथि क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार दुबे ने किसानों को खेती को व्यावसायिक रूप से करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को तकनीकी रूप से समृद्ध करने का कार्य करते हैं तथा शोध संस्थानों के नवीन तकनीक को किसानों तक पहुंचाने का कार्य करते हैं अतः अधिक से अधिक कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़कर लाभ प्राप्त करें फसल अवशेष प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर देते हुए डॉ एके दुबे ने कहा की वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा का पर्याप्त मात्रा में होना आवश्यक है ताकि हम ऑक्सीजन का भरपूर उपयोग कर सके और स्वस्थ रह सके । क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर ए रहमान ने कहा कि फसल अवशेषों को जलाने से उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड के कारण हमारी ऑक्सीजन भी कम होती जाती है अतः हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अर्बन उत्सर्जन को कम करें।

पराली प्रबंधन के फायदे बताते हुए केंद्र के विशेषज्ञ डॉ त्रलोकी सिंह ने कहा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र लखनऊ तथा अन्य केदो से विभिन्न फसल डीकंपोजर बनाए गए हैं जिनका प्रयोग करके फसल को सड़ा कर अवशेष को खाद में परिवर्तित किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत में छिड़क कर उसे पर पानी लगा दें तो 20 से 25 दिन में खाद बनाकर तैयार हो जाती है| कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञ डॉ त्रिलोकनाथ राय ने मृदा एवं पानी की जांच की आवश्यकता पर जोर देते हुए किसानों को प्रेरित किया कि मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक फसल अवशेष प्रबंधन कर खेत को पोषक तत्व उपलब्ध कराये । फसल अवशेष जैसे गेहूं के भूसे एवं धान की पावल से मशरूम उत्पादन कर पोषण सुरक्षा एवं आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने पर जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र की विशेषज्ञ अंजलि साहू ने दी। पराली चेतना यात्रा के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम में संडीला ,भरावन तथा माधोगंज विकास खंड के लगभग 150 से अधिक किसान एवं महिलाओं ने भाग लिया।

पराली प्रबन्धन चेतना यात्रा
जागरूकता अभियान
कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई द्वितीय